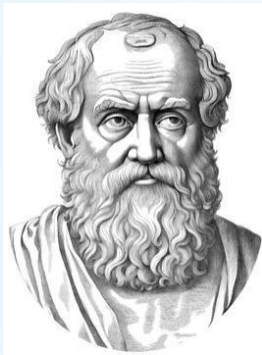


**Plato's**

गुफ़ा रूपक सिद्धांत

**Allegory of the Cave**

**Presented by ~  
Dr. Bharti soni**



# प्लेटो (PLATO)

(428 ई. पूर्व से 347 ई. पूर्व)

**कार्ल पापॅर** – “पश्चिमी चिंतन या तो प्लेटोवादी रहा या प्लेटो विरोधी लेकिन शायद ही कभी गैर प्लेटोवादी रहा हो।”

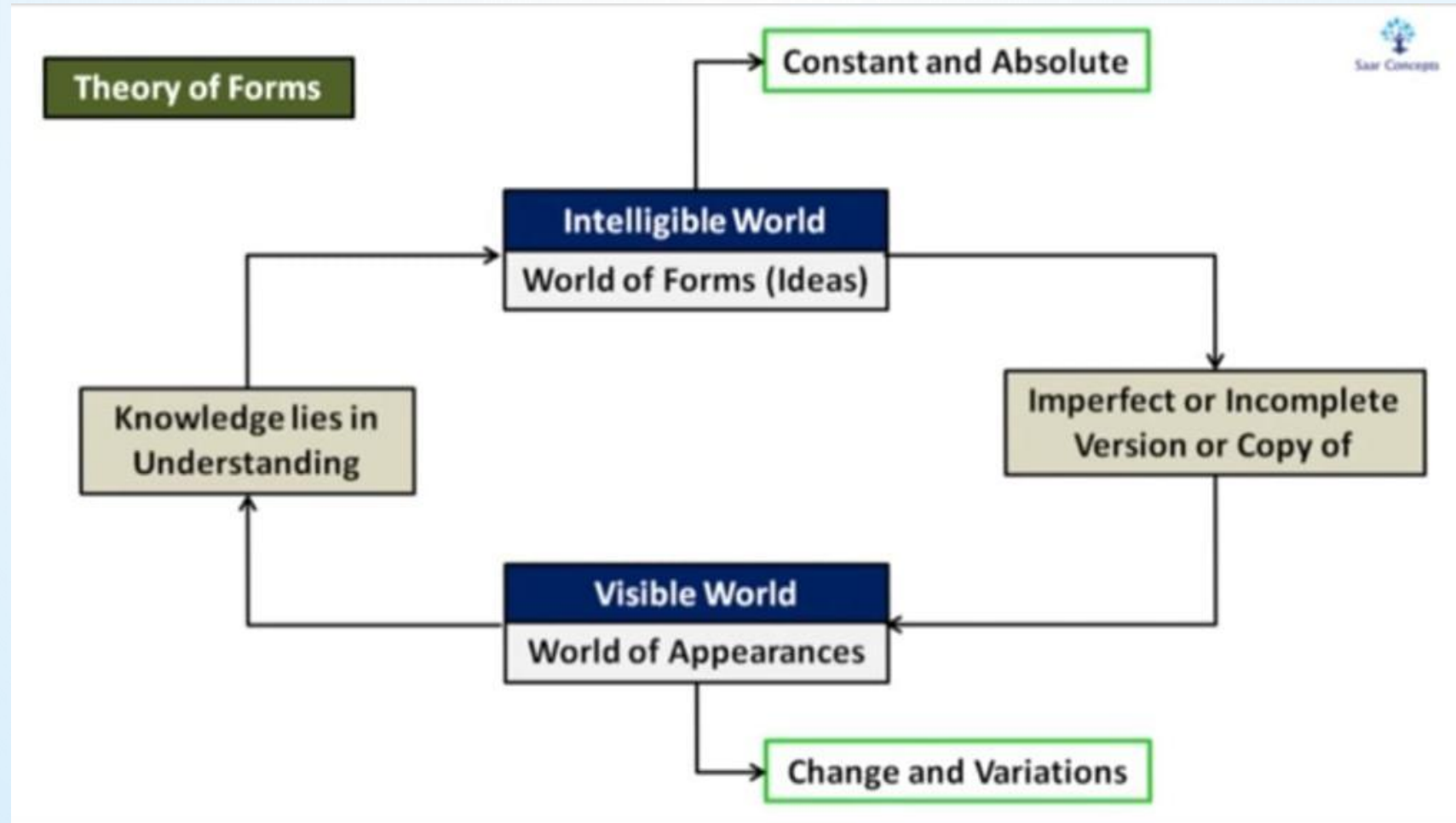
- प्लेटो का असली नाम ‘**एरिस्टोकलीस**’ था जिसका तात्पर्य है– ‘सबसे अच्छा व प्रसिद्ध’।
- प्लेटो ईसा से **428** साल पहले एक अभिजात परिवार में पैदा हुआ। जब प्लेटो पैदा हुआ उस समय लोकतांत्रिक एथेंस जहां प्लेटो का जन्म हुआ था – स्पार्टा के साथ भयंकर युद्ध में लगा हुआ था जिसे ‘पैलोपोनेसियन युद्ध’ कहा जाता है **28** वर्ष तक चले इस युद्ध ने एथेंस का पतन कर दिया।
- युवावस्था में प्लेटो राजनीति में जाने की महत्वकांक्षा रखता था पर वह सुकरात का शिष्य बन गया। प्लेटो ने अपनी युवावस्था में दो असफल सरकारें देखीं– प्रथम – ‘**तीस लोगों का शासन**’ (**THE RULE OF THIRTY**) तथा उसके बाद लोकतांत्रिक सरकार। प्रथम शासन ने उसके गुरु सुकरात को युवाओं को पथभ्रष्ट के आरोप में फसाया जबकि लोकतंत्रवादियों ने अपवित्रता व अनैतिकता के अभियोग में जहर का प्याला दिया। इन घटनाओं ने युवा प्लेटो को राजनीति से विमुख कर दिया।
- सुकरात के मृत्यु दंड, स्वसुरक्षा की चिंता व राजनीति से मोह भंग के कारण प्लेटो 11 साल इटली, सिसली मिश्र आदि स्थानों पर भटकता रहा। **388 ई. पूर्व** वह वापस एथेंस लौटा। एथेंस में उसने यूरोप के प्रथम विश्वविद्यालय के रूप में “एकेडमी (एकेडमी) की स्थापना की। ‘अकादमी’ के दरवाजे पर लिखा होता था। “जिन लोगों को गणित का ज्ञान नहीं है वे अंदर न आये।”

# • प्लेटो की मुख्य रचनाएं •

- प्लेटो की पुस्तकें ' डायलॉग ' (संवादात्मक) शैली में हैं। उसकी पुस्तकों का नायक /हीरो सुक्रात है। सिर्फ 'लॉज' को (LAW) को छोड़कर ।
- तीन पुस्तकों **REPUBLIC** , **STATESMAN** व **LAW** में उसका पूरा राजनितिक दर्शन समाहित है।
- **रिपब्लिक (REPUBLIC)** - इसमें 10 अध्याय हैं। इसका उपशीर्षक है । न्याय (**CONCERNING** जस्टिक्स) है। मुख्य प्रतिपाद विषय है — न्याय । इसमें दार्शनिक राजा का वर्णन है

## • अन्य पुस्तकें (OTHER BOOKS) –

- **द सिम्पोजियम (THE SYMPOSIUM)** – यह प्लेटो की एक नाटकीय मजेदार पुस्तक है जिसमें 'प्रेम' (इरास ) व 'सौंदर्य' का वर्णन है।
- **मेंनो (MENO)** – 'ज्ञान के स्वरूप' की चर्चा है इसमें।
- **द अपोलॉजी – (APOLOGY)** – इसमें सुक्रात पर लोग नास्तिकता व युवाओं को पथभ्रष्ट करने के आरोप व उनका बचाव है । सुक्रात के मुकदमे का वर्णन । गांधीजी द्वारा ' सत्यवान ' नाम से इसका गुजराती में अनुवाद किया था ।
- **फाइदो – (PHAEDO)**– इसमें सुक्रात की मृत्यु का मार्मिक दृश्य, है संत ही प्रत्यय का सिद्धांत, आत्मा व उसकी अनश्वरता की चर्चा है।
- **चारमाइडिस** – इसमें आत्मज्ञान का विचार पेश किया गया है अर्थात् सुक्रात के कथन – ' अपने आप को जानो ' (**KNOW YOURSELF**) पर विचार किया गया है।
- **क्रिटो (CRITO)**– इसमें भी अपोलॉजी की तरह सुक्रात के जीवन व मृत्यु पर विचार– विमर्श है।







***THANK YOU***